

न्यायालय संभागीय आयुक्त, बीकानेर संभाग, बीकानेर
पीठासीन अधिकारी श्री विश्राम मीना, आई.ए.एस

अपील संख्या: 05/2019 एल.आर.एक्ट

GCMS No. 2019/00005

1. मोहनीदेवी पुत्री नानूराम जाति बिश्नोई निवासी ग्राम रासीसर, तहसील नोखा, जिला बीकानेर।

— अपीलान्त

बनाम

1. कोयली पत्नी स्व. पोकरराम
2. शारदा पत्नी ईमीलाल
3. रामसन्ही पत्नी स्व. सुरजाराम
4. नरसीराम पुत्र पुत्रीयां सुरजाराम
5. सागर
6. बजरंग
7. सुशीला
8. अणचा
9. राधा
10. पांचा
11. छोटी
12. द्रोपदी
13. स्टेट ऑफ राजस्थान जरिये तहसीलदार, नोखा।



जाति बिश्नोई निवासीगण ग्राम
रासीसर तह. नोखा जिला बीकानेर।

— रेस्पोंडेंट्स

उपस्थित: श्री बहादूरराम सुथार
श्री विवेक शर्मा

अभिभाषक अपीलांत
अभिभाषक रेस्पोंडेन्ट सं. 3 तो 12

निर्णय


दिनांक 27.01.2026

यह अपील राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 75 के अन्तर्गत न्यायालय तहसीलदार नोखा के निर्णय दिनांक 18.12.2018 के विरुद्ध प्रस्तुत हुई है। अपील के संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार है कि —

संभागीय आयुक्त
बीकानेर

1- वादगत भूमि ग्राम रासीसर बड़ा बास तहसील नोखा जिला बीकानेर के खसरा नंबर 23 में रकबा 18 बीघा 11 बिस्वा व खसरा नंबर 245 में रकबा 23 बीघा 3 बिस्वा कुल तादादी 41 बीघा 14 बिस्वा तथा ग्राम राही कितरासर के खसरा नंबर 23 में 65 बीघा 09 बिस्वा भूमि मुसमी पोकरराम, नानूराम पिसरान सिमरथाराम कौम बिश्नोई के नाम खातेदारी दर्ज थी। मैट्रिक प्रणाली में सर्वे होने के पश्चात ग्राम रासीसर बड़ा बास के पुराना खसरा नंबर 23 के नये खसरा नंबर 77 तादादी 4.68 हैक्टर व पुराना खसरा नंबर 245 का नया खसरा नंबर 484 में तादादी 5.68 हैक्टर दर्ज हुआ। इसी प्रकार ग्राम किरतासर के पुराना खसरा नंबर 23 के नये खसरा नंबर 92 में 16.19 हैक्टर खसरा नंबर 318/94 में 0.07 हैक्टर व खसरा नंबर 320/93 में 0.13 हैक्टर कुल 16.39 हैक्टर दर्ज हुआ। अपीलांट के पिता नानूराम का देहान्त होने के बाद सुरजाराम पुत्र पोकरराम ने वादगत भूमि वाके रासीसर बड़ा बास की भूमि जरिये नामांतरकरण संख्या 2 दिनांक 05.08.95 व ग्राम किरतासर की भूमि का जरिये नामांतरकरण संख्या 4 दिनांक 22.08.95 एक कूटरचित वसीयत के आधार नामांतरकरण दर्ज करवा लिया। जिससे व्यथित होकर नानूराम की दूसरी पत्नी वस्तुदेवी ने उपखण्ड अधिकारी दक्षिण बीकानेर के समक्ष अपील प्रस्तुत की। उपखण्ड अधिकारी दक्षिण बीकानेर ने उक्त नामांतरकरण संख्या 2 दिनांक 05.08.95 एवं नामांतरकरण संख्या 4 दिनांक 22.08.95 को निरस्त कर तहसीलदार नोखा को पुनः रिमाण्ड किया कि पक्षकारान को सुनवाई का अवसर प्रदान कर निष्पत्ति पारित करें। उपखण्ड अधिकारी दक्षिण बीकानेर उक्त आदेश के विरुद्ध रेस्पोजेन्ट के दादा एवं पिता ने न्यायालय अतिरिक्त संभागीय आयुक्त बीकानेर के समक्ष अपील प्रस्तुत की। न्यायालय अतिरिक्त संभागीय आयुक्त बीकानेर उक्त प्रकरण में अपने निर्णय दिनांक 10.11.99 में उपखण्ड अधिकारी दक्षिण बीकानेर के निर्णय को बहाल रखते हुए पुनः रिमाण्ड किया कि वस्तुदेवी जिन्दा है या फौत हो चुकी है, इस तथ्य की जांच करें, यदि वास्तुदेवी फौत हो चुकी है तो उसके वारिसान को विधिवत सुनवाई का अवसर दिया जाकर एवं वसीयत की विस्तृत जांच कर नियमानुसार विधि सम्मत निर्णय पारित किया जावे। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा द्वारा उक्त रिमाण्ड प्रकरण में निर्णय करते हुए उक्त वादगत भूमि का आधा हिस्से का नामांतरकरण वसीयत के आधार पर सुरजाराम पुत्र पोकरराम के नाम दर्ज किये जाने के आदेश पारित

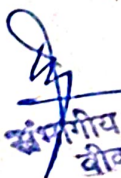



संभागीय आयुक्त
बीकानेर

कर दिए। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा के उक्त आदेश दिनांक 18.12.2018 से व्यथित होकर अपीलांट्स ने इस न्यायालय में अपील प्रस्तुत की है।


2- विद्वान अभिभाषक अपीलांट ने अपनी बहस में कथन किया है कि अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा द्वारा अपीलांट द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य एवं सबूतों को अनदेखा करते हुए रेस्पोंडेन्ट संख्या 3 ता 12 के पिता के नाम से वादगत भूमि में जो नानूराम पुत्र सिमरथाराम का आधा हिस्सा था, का नामांतरण वसीयत के आधार पर दर्ज करने के आदेश विधि व विधि द्वारा स्थापित सिद्धों के विपरीत जाकर दिनांक 18.12.18 को पारित किया है। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा दोनों नामांतरणों का अलग अलग निर्णय पारित किया जाता था जिसे बिना फाईन्डिंग किये एक साथ मृतक अपीलांट पोककरराम व मृतक वस्तुदेवी रेस्पोंडेन्टान के वारिसान को रिकॉर्ड पर लिये बिना विधि व न्याय के सिद्धों के विपरित निर्णय पारित किया है, जो निर्णय की श्रेणी में नहीं आता है। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा के समक्ष गवाहन के द्वारा यह साबित किया था कि नानूराम ने अपने जीवनकाल में कोई वसीयत निष्पादित नहीं करवायी तथा नानूराम की पत्नी वस्तुदेवी की अपीलांट एकमात्र वारिस है, इतना ही नहीं, अधीनस्थ न्यायालय में गवाहान द्वारा साबित किया था कि सुरजाराम द्वारा जो वसीयत करवाई गई थी वह कूटरचित है, फिर भी अधीनस्थ न्यायालय सुरजाराम के प्रभाव में आकर आदेश जैर अपील पारित करने में कानूनी भूल कारित की है। अधीनस्थ न्यायालय द्वारा अपीलांट द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों का तथा अपीलांट के वकील द्वारा की गई बहस का अपने निर्णय में कहीं अंकन नहीं किया ना ही अपीलांट द्वारा प्रस्तुत नजीरों का अपने निर्णय में हवाला दिया। आदेश अधीनस्थ न्यायालय स्पीकिंग आदेश की श्रेणी में नहीं है। उक्त तथ्यों से यह सुस्पष्ट है कि अधीनस्थ न्यायालय ने आदेश जैर अपील पारित करने में न्यायिक प्रक्रिया की हत्या की है। उक्त आदेश, आदेश की श्रेणी में नहीं आता है। अतः अपील अपीलांट स्वीकार की जाकर अपीलाधीन आदेश दिनांक 18.12.2018 अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा निरस्त किया जावे। अपीलांट नानूराम की एकमात्र वारिस होने के नाते उक्त वादगत भूमि का आधा हिस्सा है, कि अपीलांट एकमात्र वारिस होने के कारण अपीलांट के नाम से नामांतरकरण दर्ज करने के आदेश फरमाये जावें। अन्य कोई अनुतोष अपीलांट के पक्ष में हो दिलाया जावे।




संभोगीय आयुक्त
दीकानेर

3- विद्वान अभिभाषक रेस्पोजेण्डेन्ट्स ने अपनी लिखित बहस एवं दौराने बहस में कथन किया है कि अपीलांट को उक्त अपील प्रस्तुत करने बाबत सर्वप्रथम तो कोई लोकस स्टैण्डाई ही हासिल नहीं है इसलिए इसी आधार पर अपील प्रथत दृष्टया ही खारिज फरमाई जावें। अपीलांट की अपील आदेश अधीनस्थ न्यायालय दिनांक 18.12.2018 के विरुद्ध पेश की गई है जिससे अपीलांट अधीनस्थ न्यायालय के समक्ष हाजिर थी और उसे आदेश जैर अपील के बारे में भती भाती जानकारी हासिल नहीं थी उसके बावजूद अपील श्रीमान जी के समक्ष दिनांक 14.02.2019 को प्रस्तुत की गई है। जबकि अपील की मियाद कानून 30 दिन तय है इसलिए स्पष्ट रूप से अपील मियाद बाहर है जिसके साथ में अपीलांट ने धारा 5 प्रार्थना-पत्र बाबत छुट मियाद हेतु पेश नहीं किया इस लिए उक्त अपील मियाद बाहर होने के कारण भी काबिल खारिज योग्य है। उक्त प्रकरण में अपीलांट अपने आप को नानूराम पुत्र सिमरथाराम की एकमात्र पुत्री बतला रही है जबकि अधीनस्थ न्यायालय के निर्णय में विस्तृत रूप से पढने मात्र से भली-भाती दुध का दुध व पानी का पानी अपने आप अलग हो जाता है इसलिए अपीलांट का आराजी मुतनाजा की भूमि में नानूराम की पुत्री नहीं होने के कारण अपील प्रस्तुत करने की कोई लोकस स्टैण्डाई भी हासिल नहीं है। रेस्पोजेण्डेन्ट संख्या 3 ता 12 के पति/पिता स्व. सुरजाराम पुत्र पोकरराम के हक में नानूराम पुत्र सिमथाराम ने जो वसीयत नानुराम ने दिनांक 22.08.95 को अपने कोई औलाद नहीं होने के कारण अपने भतीजे सुरजाराम पुत्र पोकरराम के हक में पंजिबद्ध करवाई थी जिस अपीलांट द्वारा आजतक किसी सिविल न्यायालय में चैलेज नहीं किया हैं। अधीनस्थ न्यायालय ने जांच में पाया कि तथाकथित मोहनी देवी नानूराम पुत्र सिमरथाराम की पुत्री नहीं होकर उसके नाते आई अन्य महिला जिसका नाम भी वस्तुदेवी था उसकी पुत्री थी उक्त वस्तुदेवी के दो पुत्रीया थी जिसमें एक का नाम नोहनी एवं दूसरी का नाम सुरती था वास्तव में नानूराम पुत्र रिमरथाराम ने अपने जीवनकाल में दो शादियां की थी संयोगवंश दोनों पत्नियों का नाम वस्तुदेवी था जिसमें से पहली पत्नी वस्तुदेवी जो नानूराम को छोड़कर जा चुकी थी तथा स्वस्थ विभाग में कार्यरत थी जिसने किसी गंगानगर निवासी गुरुचरण से शादी कर ली, जिसके द्वारा उसे एक पुत्री उत्पन्न हुई जिसका नाम सुनीता जो सरकारी अध्यापिका है। जयसुखराम वस्तुदेवी का भतीजा है जिसने जयसुखराम पुत्र भागीरथराम जो अन्य अपील में अपीलांट है उसने वस्तुदेवी की अपंजीकृत वसीयत जो




संगीत आधुनिक

तथाकथित फर्जी एवं कुटरचित बना रखी हैं। मकान व खेत की भूमि को हडपने बाबत बना रखी है। मोहनी देवी जो अपने आप को तथाकथित नानूराम एवं वस्तुदेवी की पुत्री बतला रही है वास्तव में वह पुत्री तो वस्तुदेवी निवासी कुदसु की है किन्तु उसके पिता का नाम नानूराम पुत्र सिरथाराम नहीं होकर बगडावतराम पुत्र जगाराम की पत्नी थी जिसकी मृत्यु हो चुकी है। जिसके केवल मात्र दो पुत्रीयां मोहनी व सुरती थी और 15-20 वर्ष की आयु में थी जो वास्तव में बगडावतराम की जायज सन्ताने हैं। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा द्वारा उक्त वादगत भूमियों हेतु वस्तुदेवी की फोट होने व उसके जायज वारिसान की जांच की पुष्टि एवं सुरजाराम के हक में नानूराम पुत्र सिमरथाराम द्वारा निष्पादित पंजिवद्ध वसीयत बाबत पुर्ण जांच की जाकर आदेश जैर अपील पारित किया गया है। उसमें किसी प्रकार का कोई संदेह व कोई प्रश्न शेष नहीं रह गया तथा सभी पक्षकारों को उचित सुनवाई व सबुत के गवाहों लेकर उनसे जिरह करके विधिवत निर्णय पारित किया गया है। अतः रेस्पोंडेन्ट संख्या 3 ता 12 का निवेदन है कि अपीलांट की अपील लोकस स्टेण्डाई हासिल नहीं होने तथा मियाद बाहर होने व किसी प्रकार का कोई कानूनी हक हासिल नहीं होने के कारण चलने योग्य नहीं होने के कारण निरस्त फरमाई जावें।

4- हमने पत्रावली में उपलब्ध दस्तावेज, अधीनस्थ न्यायालय के उपलब्ध अभिलेख का ध्यान पूर्वक अवलोकन एवं वहस उभय पक्ष पर मनन किया। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा ने ग्राम रासीसर बड़ा बास के खसरा नंबर 23 में रकबा 18 बीघा 11 बिस्वा व खसरा नंबर 245 में रकबा 23 बीघा 3 बिस्वा कुल तादादी 41 बीघा 14 बिस्वा तथा ग्राम राही किरतासर के खसरा नंबर 23 में 65 बीघा 09 बिस्वा भूमि मैट्रिक प्रणाली में सर्वे होने के पश्चात ग्राम रासीसर बड़ा बास के पुराना खसरा नंबर 23 के नये खसरा नंबर 77 तादादी 4. 68 हैक्टर व पुराना खसरा नंबर 245 का नया खसरा नंबर 484 में तादादी 5. 68 एवं ग्राम किरतासर के पुराना खसरा नंबर 23 के नये खसरा नंबर 92 में 16.19 हैक्टर खसरा नंबर 318/94 में 0.07 हैक्टर व खसरा नंबर 320/93 में 0.13 हैक्टर कुल 16.39 हैक्टर भूमि का आधा हिस्सा नानूराम पुत्र सिमरथाराम की वसीयत के आधार पर सुरजाराम पुत्र पोकरराम के नाम दर्ज करने का आदेश पारित किया। अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा ने उक्त प्रकरण में निर्णय करने से पूर्व पूर्ण जांच कर, वस्तुदेवी की कथित वारिस मोहनी देवी को सुनवाई एवं दस्तावेज प्रस्तुत करने का पर्याप्त अवसर प्रदान कर और



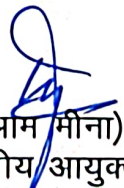

व्यक्ति आयुक्त
रायचूर

वसीयत पत्र में अंकित गवाह से वसीयत की सत्यता प्रमाणित करवाकर अपीलाधीन आदेश दिनांक 18.12.2018 पारित किया है। तहसीलदार नोखा ने उक्त अपीलाधीन निर्णय पारित करने में पूर्ण विधिसम्मत प्रक्रिया का पालन किया है। तहसीलदार नोखा ने अपीलाधीन आदेश दिनांक 18.12.2018 वसीयत के आधार पर पारित किया गया है। अपीलांट द्वारा अपीलाधीन वसीयत को किसी भी सक्षम न्यायालय से निरस्त नहीं करवाया गया। अपीलांट द्वारा अपनी अपील के संबंध में कोई ठोस साक्ष्य भी प्रस्तुत नहीं किये गये है। ऐसी स्थिति में जब तक अपीलाधीन वसीयत को किसी सक्षम न्यायालय से निरस्त नहीं करवाया जाता है, तब तक उक्त वसीयत के आधार पर पारित नामांतरकरण दर्ज करने के आदेश को निरस्त किया जाना न्यायोचित नहीं है।

उपरोक्त विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि तहसीलदार नोखा के निर्णय दिनांक 18.12.2018 को कानूनी प्रक्रिया अपनाते हुए पारित किया गया गया है जिससे अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा के अपीलाधीन निर्णय दिनांक 18.12.2018 को यथावत रखा जाना उचित प्रतीत होता है। हम अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा के अपीलाधीन निर्णय दिनांक 18.12.2018 में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते। अतः अधीनस्थ न्यायालय तहसीलदार नोखा के अपीलाधीन निर्णय दिनांक 18.12.2018 को यथावत रखते हुए अपील अपीलांट इसी स्तर पर खारिज की जाती हैं।

5- तदनुसार अपील अपीलांट निर्णित होकर नम्बर से कम हो। निर्णय की प्रति अपील पत्रावली में शामिल की जाकर पत्रावली सुव्यवस्थित रखी जावे। निर्णय आज दिनांक 27.01.2026 का लिखवाया जाकर खुले न्यायालय में सुनाया गया।




(विश्राम मीना)
संभागीय/आयुक्त
बीकानेर